'अच्छे विचारों से सभी
आतंकित हो जाते हैं
मीडियावाले भी ऐसे विचारों से
खार खाते हैं
उन्हें चाहिए बस बाज़ार
माल बेचनेवाले विज्ञापन
पारदर्शी कपड़ों में नहाती लडकियां
अंतर वस्त्र की बिक्री केलिए
अर्ध नग्न पुरुष
कंडोम और कामुक चेष्टाये
संस्कृति और नैतिकता का खिलवाड़
करती शब्दावली

.....

दर्शक सिकुड़कर अपने ड्राईंग रूम
में कैद हो जाएगा
वह कहीं और जाना भी नहीं चाहता
यही क्रम सदियों से दुहराया जा रहा है '

इसके कारण जहाँ देखो वहाँ बच्चों के भीतर से बालपन कम और कैशोर्य ज्यादा दिखता है। लगता है ऑटो प्रोमोशन हो गया है। उन्हें अब न दादा-दादी, नाना-नानी, पिता-माता, भाई-बहन और माँ-मौसी की जरूरत है, न किसी पड़ोसी या रिश्तेदार की। आत्मीयों से लेकर रिश्तेदारों तक की भूमिका पूरी कर रहे हैं ये इलैक्ट्रॉनिक उपकरण और अदृश्य संचार सेतु। लगातार फालतू चीजों पर नज़रें गड़ाए रखने की ऐसी आदत पड़ गई है कि लगातार अनावश्यक दर्शन की वजह से नाक पर चश्मों का बोझ. स्थायी हो गया है और स्कूलों में छोटे-छोटे बच्चों से लेकर किशोरों तक को चश्माधारी होना पड़ा है।वह जमाना लद गया जब विद्यार्थिच्यों के चेहरे से ओज टपकता था और शरीर में समाया हुआ बल मुँह बोलता था। आज ओजहीन पीढ़ी हमारे सामने है और ऐसे में इस पीढ़ी से राष्ट्र क्या उम्मीदें रख सकता है। कवी की व्यथा इन पंक्तियों में दर्शनीय है -

' आजकल मेरा टिकू
कोई सवाल नहीं पूछता है
वह टॉम एंड जेरी ,पाक्मान
में उलझा रहता है
चाँद सितारों की बात नहीं करता
डबू डबू एफ की नकली कुश्ती
के दाव सभी को दिखाता रहता है
वह दादा दादी से कहानियां
नहीं सुनता
कम्प्यूटर गेम में डूब जाता है '

एक अलग दृष्टिकोण से कवी ने समाज को देखा और समस्याओं पर विचार किया और अपने शब्दों को लिपि बद्ध किया .ढेर सारे सवाल ये कवितायें हमारे मन में उठा रहे है.उनके जवाब ढूँढने का चुनौती देकर एक चौकीदार के सामान सब कुछ देखते हुए सन्नाटे को पीते हुए आप खड़े है .उनकी चुप्पी भी किसी को भय प्रदान कर रहे है. कविता में बाँकपन और सीधे कहने की कला आपकी खासियत है. कविता में उसे जब अपनी बेचैनी और आक्रोश को व्यक्त करने के लिए कुछ नहीं मिलता तो विचार के अस्त्र का सफलता के साथ इस्तेमाल करता है। अपने सवालों के सामने चुप होकर खड़े रहने वाले नयी के पीढी के लोगो से तनाव भंग करने की प्रार्थना खुबालकर जी कर रहे है .उन्हीं शब्दों को दुहराते हुए इस आलेख को समाप्त करना समीचीन होगा ,

' तुम सब
चुप क्यों रहते हो ?
बिखेर दो
चारों और चुभती संवेदनाएं '

आधार ग्रंथ
रूकती नहीं है नदी ..उमाकांत खुबालकर
शिवांक प्रकाशन ,नयीदिल्ली

बाहरी तौर पर हम पायेंगे हम विकास की और तेजी से बढ़ रहे हैं, मगर यह विकास पूर्ण नहीं है। जनतांत्रिक सरकारों के नीतियों के कारण क्या का क्या हो रहा है कवी के शब्दों में -सुनिए

अब कुपात्र ,अकुशल ऊपर उठ रहे हैं
और बाकी आत्म दहन कर रहे हैं
यहाँ जंगल राज है
अभिव्यक्ति सिसक रही है
बोलता है किसी 'स्कूल ' से घिर जाता है
और न्यायालय की बाहरी दीवारों से टकराकर
फुटपाथ पर आ जाता है
जहाँ अपने भी पत्थर मारते हैं "
चौकीदार के रूप में कवी याद दिला रहे हैं
'जागते रहो जागते रहो '

हर पहल का दो मुख होगा इसके बारे में कोई भी ध्यान नहीं देते. पुराने शिक्षा रीती में ऐसी शिक्षा प्रदान करते थे .इसलिए उनको हर वक्त सही रास्ते चुनने में कोई मुश्किल नहीं थे . भारत में शिक्षा प्रणाली की गौरवशाली परंपरा रही है। प्राचीन काल में भारत का अपने शिक्षा केन्द्रों के कारण पूरे विश्व में विशिष्ट स्थान था। नालंदा और तक्षशिला विश्व प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र थे जहाँ विश्व के कोने-कोने से लोग शिक्षा ग्रहण करने आते थे। आज हमारी शिक्षा प्रणाली ऐसे नौजवान तैयार कर रही है जिन्हें जीवन का उद्देश्य ही नहीं पता और इनकी तादाद अच्छी खासी है. हमारे आस-पास सामाजिक प्रदूषण के जो मामले सामने आ रहे हैं वे हमारी शिक्षा पद्धति पर बहुत बड़ा प्रश्न चिन्ह है। इसका चित्रण कवी ने इस प्रकार किया है .

'सरकारी के पाल्योर्म की
सही पटरी पर
खड़ा होकर भी गलत हो सकता हूँ
बुजुर्ग कहते हैं बेटा
जमाने के साथ चलो
किस तरह चलना है
यह नहीं बताया उन्होंने '
एक चीज के दो पहलू हैं
इनका व्यावाहारिक भेद
स्कूलों में नहीं पढ़ाया जाता "

सही वक्त पर सही निर्णय लेने की कला अब लोग भूल रहे हैं. समाज में अनीतियाँ बढ़ने का कारण भी यही है . राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का कहना था कि "वास्तविक शिक्षा वह है जिससे व्यक्ति के चरित्र का निर्माण हो"। वास्तव में हमारे देश में शिक्षा का उद्देश्य यही होना चाहिए। लेकिन इस दृष्टिकोण से अगर देखा जाए तो हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था में चरित्र निर्माण का कहीं कोई स्थान नहीं है। दूसरी ओर हम ऐसी शिक्षा पद्धति को अपनाए हुए हैं जो लोगों को इंसान और विद्वान के बजाए बेरोजगारों की फौज तैयार कर रही है। समकालीन शिक्षा रीती के प्रती कटु आलोचना कवी ने यहाँ प्रस्तुत किया है।

सब चराचर में अपने आप को देखने की सलाह दिए पौराणिक समाज से हम बहुत दूर आगे आ चुके हैं.मगर लोगों के बीच की दूरियां कम करने में हम सक्षम नहीं हुए हैं . अपने बच्चों को पूरी दुनिया को शक की नज़र से देखने की सलाह हम दे रहे हैं।इसके फल स्वरूप आये परिवर्तन का सुंदर वर्णन इस प्रकार किया है .

' खुलकर मिलते नहीं हैं लोग
दिन रात बुझते रहते हैं लोग
जिन्दगी के आसमान में
धुए के काले बादल बनाकर
घुटते रहते हैं लोग

जीने के लिए पूरी जिंदगी पड़ी है
रोने के लिए आंसुओं की लड़ी है
हाथ -पाँव अब चल रहे हो
तब भी मुस्कुराते नहीं हो लोग

शहर की भीड़ में
अजनबी बन जाता है हर कोई
फिर भी परिचय बढ़ाते नहीं हैं लोग '

समाज में संस्कारों की कमी का रोना आजकल हर कहीं रोया जा रहा है। इस संस्कारहीनता की वजह से ही आजकल कई समस्याएं पैदा हो गई है. कई लोगों को बेवजह परेशानियों का सामना करना पड़ता है।मनुष्य के दुर्गुणों को निकाल कर उसमें सद्गुण आरोपित करने की प्रक्रिया का नाम संस्कार है। वास्तव में संस्कार मानव जीवन को परिष्कृत करने वाली एक आध्यात्मिक विधा है। संस्कारों से सम्पन्न होने वाला मानव सुसंस्कृत, चरित्रवान, सदाचारी और प्रभुपरायण हो सकता है अन्यथा कुसंस्कार जन्य चारित्रिक पतन ही मनुष्य और समाज को विनाश की ओर ले जाता है। पूर्ण मानव समाज, चाहे वह विश्व के किसी भी कोने में रहता हो, किसी न किसी धार्मिक विश्वास या मान्यता से अवश्य जुड़ा रहा है.

धर्म के नाम पर वे सारे काम हो रहे हैं जो दूसरे धंधों में होते हैं। कहीं रिश्वतखोरी, कहीं समूहों का टल-टल, कहीं और कुछ। धर्म के नाम पर और धर्म की आड़ में हर खेल खेला जा रहा है बिना किसी भय के। यह धर्म ही है जिसका चोला धारण कर कोई कुछ भी करने को स्वच्छन्द हो जाता है। समाज की वर्तमान स्थिति और धार्मिक मान्यताओं के बीच तालमेल की कमी आज बढ़ रहे है. हर चीजों को व्यावसायिक नज़र से देखने की प्रवृत्ति के कारण ही यह हाल आ चुके हैं. धर्म के नाम पर हो रहे करतूतों पर हसी उड़ाते हुए कवी ने लिखा .

मंदिर में
मैंने देखा -
पुजारी की नज़रें
व्यावसायिक के कामरे की तरह
स्थिर हो गयी
किसी भक्तिमती महिला के विशिष्ट
अंगों पर
उसके हाथ में
पूजन का दान -दक्षिणा की सामग्री थी
वह आँख मूंदकर
मूर्ती के सामने
निर्विकार खड़ी थी
पुजारी की कुछ भावनाएं जाग रही थी
परंतु भगवान सो रहा था ' इससे ज्यादा क्या टिप्पणी करना है ?

धर्म को अपनाना चाहे तो इसे सच्चे मन से इस प्रकार धारण करें कि जीवन और चरित्र के तमाम पहलुओं में धर्म का वास्तविक स्वरूप नज़र आए। धर्म के नाम पर पाखण्डों के ज़रिये लोगों को भ्रमित करने वाले आदमियों का जीवन कुछ काल तक के लिए ही दैदीप्यमान रहता है, फिर इनका शेष जीवन अँधेरों का संगी-साथी बना रहता है।

अब समाज में बाजारीकरण पूर्णत व्याप्त हो चुका है. हर चीज अब बिकाऊ चीज बन चुका है . बाज़ार का अभिन्न अंग है विज्ञापन . अब विज्ञापन सभी सीमाओं को तोड़ कर बढ़ रहा है . सृष्टि द्वारा सृजित हर तरह के प्राणियों में मादा प्राणी स्वयं में पूर्ण आकर्षण रखता है।इसी सिद्धांत के आधार पर बाज़ार नारी को माल बना रहे हैं . संसद या न्यायालयों में ऊंची-ऊंची बात करनेवाला पुरुष समाज औरतों को मूल रूप में एक कमोडिटी ही मानता है। यही कारण है कि पुरुष हर विज्ञापन में अब उन्हीं वाली कमसीन लड़की या महिला को ही देखना पसन्द करता है। अब तो हद ही हो गई है। खेल में भी सौन्दर्य का धंधा ज़ोर पकड़ रहा है। क्रिकेट मैच का छक्का बाउन्ड्री पार क्या करता है कि आयातित चीयर गर्ल्स का डान्स शुरू हो जाता है।

खुबालकर जी बता रहे हैं .

जो कुछ हो रहा है जनता को भरमाए [illegible] हो रहे है
यह वहा दिन में [illegible] बता इनमें नेतागण बोलते रहते है, 'मसाली' नामक कविता में आप पूछ रहे है,

'जनतंत्र यानी जनता का शासन
जनता के लिए होता है
जब यह प्रश्न खड़ा होता है
कहाँ है जनता ?'

जनता के लिए है कहते हुए कुछ लोग सब कुछ [illegible] कर रहे है . भारत की अपने कब्जे में रखने के लिए अंग्रेजों लोगों ने हमें धर्म के नाम पर अलग किया था. आज के शासक तो हमें हर तरह अलग करते जाते है. 'दुनिया बदी हो हो चली है'

'जनतंत्र के अन्दर भीड़ में
दिखायी नहीं दी अब तक
गरीबी रेखा के नीचे
निरन्तर दबती जा रही है'

'राष्ट्रगान' नामक कविता में कवी हमारे नेताओं की और आवाज उठा रहे है.

'प्रधान मंत्री जी सभा में बोल रहे थे
कि अब लोक तन्त्र का चेहरा
बदलता जा रहा है
जनता देख रही जो रही है
हाँ ,ये वही लोग थे
जिनके मुखौटे मीडिया दिखा रहा था
और राष्ट्र निशब्द बन गया था'

लोगों के चुने गए नेता अपने चुनाव तक जनता को कुला समझ कर काम करते है।जनता ने जनता को स्थान मिलता है , मगर वह आज वह नहीं रहा।अपनी भलायी केलिए पूरी सत्ता का प्रयोग करने से नेतागण हिचकते नहीं .

'शांतिप्रिय जनों के प्रदर्शन पर
आततायू हो चलते रहे
इन बीच हो रहे थे का सांप्रित
जनतंत्र को रौंदता हुआ निकल गया

दौलतों से इजरोलाती नदी तक आते आते दुनिया ने अपना चोला तेजी से बदला है। कोई भी अपने अंदर देखने और समझने तैयार है ही नहीं .इसलिए है प्रतिक्रिया इनसे होता ही नहीं .कवी इसको और 'सुरक्षित' नामक कविता में दे रहे है .

'मन और अंतर्मन के बीच
टंग गया है झीना सा
पर्दा हो या इतिहास
हम अपने अंदर झांकते नहीं
हर बार नंगा पड़ता सच
सामने खड़ा हो जाता है
हम आँखें मूँद लेते है'

आम आदमी भी आज सुबह-सुबह अखबार की सुर्खियाँ पढ़ने के बाद अपनी दिनचर्या शुरू करता है। लेकिन अखबार के हर पन्ने पर भय और आतंक ही दिखाई देता है। दुनिया इतनी भी खराब अभी नहीं हुई है जितने कि हम उसे प्रचारित कर रहे है। अभी बहुत कुछ अच्छा भी है हमारे समाज में, हमारे परिवेश में लेकिन हम तो बुराई देखने के अभ्यस्त हो चुके है। देखिये

'बूढ़ा सपना के गर्भ गृह से
नए पुरोहितों नारदकालों के डर

चल गए गए

लोग माथा टेकते रहे
भक्त शंख नाद करते रहे

बस

इतने ही समाचार पर्याप्त है
हमें अपने को जानने केलिए'

आज का परिवेश ऐसा है कि जहाँ देखो वही लोग परेशान है। उनके बीच कब, कहाँ और क्या हादसा हो जाए किसी को कुछ पता नहीं। आतंकवाद का दानव जगह-जगह अपना दाँव लगाए बैठा है इसलिए ही कवी कह रहे है -

'आज आदमी निरंतर हारता ही

जा रहा है

क्योंकि उसे वर्ष युद्ध एक साथ लड़ने पड़ते है

झूठ इतना बड़ा होता जा रहा है
कि सत्य का खंडित टुकड़ा भी
सामने आने से कतराता है'

संस्कृति का उद्देश्य मानव जीवन को सुन्दर बनाना है। मानव की जीवन पद्धति और धर्मनिरपेक्षिता उन जीवन पद्धति का विकास उन संस्कृति शब्द से प्रकट होता है। भारतीय ऋषियों ने लोककल्याण की कामना से प्रेरित होकर मानवीय गुणों को दैवीय उत्थान से विभूषित करने के लिए संस्कारों को अत्यन्त वैज्ञानिक एवं सार्वकालिक सार्वभौमिक व्यवस्था दी है। ऐसा नहीं है कि यह केवल भारतीयों के लिये ही उचित है अपितु किसी भी भू-भाग के मानवीय गुणों के उत्थान हेतु ये संस्कार समीचीन है। वसुधैव कुटुम्बकम की भावना अपनाने के कारण ही इस पावन धरा पर एक अत्यंत दिव्य विपुल युगबोधिय क्षेत्र निर्मित हुआ। भारतीय संस्कृति की यही चिकित्सा ऊर्जा ही हमारी चिंतन परम्परा की धाती है। भूगोल, इतिहास और राज्य व्यवस्थाओं की कुछ संकीर्णताओं के इतर प्रत्येक मानव का अभ्युदय और निःश्रेयस ही भारत का अभीष्ट है। साम्राज्य भारत का साध्य नहीं वरन् साधन है। लेकिन आज हाल बदल रहे है .खुशहाल जी की राय है -

'यह युग नियति का संताप है
जो सच नहीं है
उसे हम ओढ़ रहे है मित्र नए दिन

दुनिया बदलती जा रही है
दावा भी है
वसुधैव कुटुम्बकम के स्थान पर
'ग्लोबलीसेशन' आ गया है'

जहाँ पुरानी कविता में भोलापन और प्रकृति से निकटता देखने को मिलता है वहीं नयी कविता में औद्योगिक विकास और उसकी विभीषिका में पिसते गरीब मजदूर का चित्रण मिलता है। महानगरीय निर्माण और विकास के विगुल के साथ सारी नदियों को छोटी सिमटती का मुखर सब यहाँ सुना जा सकता है।

'जब यहाँ पेड़ था
चिड़िया चहकती थी
मैना गुनगुनाती थी
टपटपटपटपटपटपटपटपटपटपटप...
तब की बात कुछ और थी
अब धूप कड़कती है
बारिश और तेज हवा से
खिड़कियाँ ,दरवाजे बौंक उठते है
धूप का चमकीला बादल
बालकनी में महकता है
चूंकि ,समय खिसक गया है
नयी सभ्यता आ गयी है'

उस सभ्यता में सब छिछिम है, जहाँ तो जीवन तक .कवी आगे कह रहे है .

'...... अब यहाँ बचपन नहीं खेलता
खिड़कियों ने नए लिबास पहन लिए है

बालकनियों गमलों में
कृत्रिम फूल खिलते है
दरवाजे बंद रहते है
और इतिहास बाहर झांकता है'

वह इतिहास कवी को और हमको पुरानी संस्कृति के बारे याद दिला रहे है.

'राजपथ के बजाय
जनपथ
और पगडंडियों से लिपटता
संकरी गलियों का कबूतर रास्ता
अच्छा लगता है मुझे'

नवम्बर २०२२ / वर्ष:२,अंक:११ ISSN: 2583 - 5750

परामर्श मण्डल

भारत

डॉ. प्रताप सहगल
(९८१०६३८५६३)
प्रो. अब्दुल बिस्मिल्लाह
(९८११३०६३३१)
डॉ.शशि सहगल
(९८१११६६१२१)
प्रो. कृपाशंकर पाण्डेय
(११८४५२३७०६)
प्रो. मोहन
(९८७११९५५००)
(दिल्ली विश्वविद्यालय)
प्रो.लालचंद राम
९९९००७०८९५
विभागाध्यक्ष,एन सी ई आर टी
प्रो.राम आहलाद चौधरी
(९४३२०५१५००)
(विभागाध्यक्ष कलकत्ता विश्वविद्यालय)
प्रोफेसर (भूतपूर्व) शत्रुघ्न कुमार
shatrughnakumar@ignou.ac.in
प्रो.चंदा देवी
(८००४९२८४४१)(इला. यू.)
प्रो. रामकली सराफ
(९३८९४३२१६५)
डॉ० प्रभा पंत
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग,
एम०बी०रा०स्ना०महाविद्यालय,हल्द्वानी
dr.prabhapant@gmail.com
प्रो. रूबी जुत्शी
कश्मीर यूनिवर्सिटी
९४१९०५८५८५

विदेश

प्रो. सरन घई
(±१ (६४७) ९९३-०३३०)
कनाडा
तेजेन्द्र शर्मा
(४४ ७४००३१३४३३)
(Üet.kesā.)
प्रो. पुष्पिता अवस्थी
(±९१ ७०५८४-६२९५१)
(www.pushpitaawasthi.com)
नीदरलैंड
डॉ. सुरेश चंद्र शुक्ल
'शरद आलोक'
(±४७ ९००७०३१८)
(speil.nett@gmail.com)
नॉर्वे
अनुराग शर्मा
(±१ (४१२) ६९२-१३६२)
(indiasmart@gmail.com)
अमेरिका
रेखा राजवंशी
(±61 403116301)
ऑस्ट्रेलिया

प्रकाशक, मुद्रक और मालिक डॉ. मो. सलीम ने अज़ीम इंडिया प्रिंटर्स, अटाला, प्रयागराज (इलाहाबाद) में छपवा कर ४८३ अटाला, प्रयागराज (इलाहाबाद) से प्रकाशित किया।सम्पादक डॉ. मो. सलीम, ४८३ अटाला, प्रयागराज (इलाहाबाद)सभी मामले प्रयागराज (इलाहाबाद) की ही अदालत में होंगे।

साहित्य मेघ

sahityamegh.com

नवम्बर २०२२ /वर्ष:२,अंक:११

डॉ. दानिश (९६९६४८६३८६)
प्रधान संपादक
डॉ.तबस्सुम जहां (९८७३१०४११०)
उप-संपादक (अवैतनिक)
नवम्बर २०२२ / वर्ष:२,अंक:११
एक प्रति : १५०/-, वार्षिक : १५००/-
BANK DETAIL : IFSC CODE : UBIN0530371
MOHD SALEEM UNION BANK, CIVIL LINES, PRAYAGRAJ

डॉ.राजविंदर कौर (१७५९९१२४७४)
सह-संपादक (अवैतनिक)
श्रीमती एस.के.'सुमन' (९१७०६८०२३५)
आर्थिक सलाहकार
डॉ.मुहम्मद सलीम (संपादक) (९९९९१४२४११)
sahityamegh@gmail.com
४८३,अटाला,प्रयागराज-२११ ००३
उत्तर प्रदेश,भारत

युगानुसरण की प्रवृत्ति और मैथिलीशरण गुप्त	ओमप्रकाश सिंह	५
प्रेमचंद के 'पत्र-साहित्य' की निश्छलता	प्रो.डॉ. राम आह्लाद चौधरी	१२
हरिऔध के काव्य में नारी	प्रो० अशोक सिंह और डॉ० अपराजिता मिश्रा	२३
२१वीं सदी की हिन्दी कविता में हाशिये उलांघती स्त्रियों के स्वर	डॉ. प्रियंका सोनकर	२६
'रूकती नहीं है नदि' -एक अद्धयन	डॉ.रजीत एम्	३२
'स्त्री मुक्ति की अवधारणा और नई कहानी आन्दोलन'	डा स्नेह लता नेगा	३९
हिन्दी में शोध की समस्याएं'	डॉ. बिजय कुमार रविदास	४४
मुक्तिबोध: संवेदनात्मक ज्ञान और ज्ञानात्मक संवेदना	डॉ.अर्चना पाण्डेय	४८
सर्जक की आस्था और विवेक का विवेचन	डॉ. शम्भु नाथ मिश्र	५२
'संजीव के कहानियों में हाशिये के समाज का यथार्थ चित्रण''	सपना पाठक	५६
'समकालीन कविता में चंद्रकांत देवताले का मानवीय सरोकार'	ज्योति गिरि	५९
बोलने वाली औरत' कहानी में पितृसत्ता के वर्चस्व की अभिव्यक्ति	सिमरन	६६
पंजाबऔरहरियाणाप्रांतमेंकठपुतलीपरंपरा- एक अध्ययन	डॉ हनीफ भाटी	७०
तीसरी ताली' उपन्यास में चित्रित एलजीबीटी	सीमा कुशवाहा	७२
माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिंदी पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रति शिक्षकों की अवधारणा: एक अध्ययन	प्रो लालचंद राम	७९
साहित्य अकादेमी समाचार		९९

किसी एक मात्र की । इनकी कविताओं में साझा-चूल्हा समानता और साम्यवाद का प्रतीक है. नीला आसमान और दुनिया को नाप लेने की जीवट भावना इनकी कविता में ऐसे बिन्दु है जो इक्कीसवी सदी की स्त्री कविता में मुखर हुए हैं । प्रसिद्ध कवयित्री अनामिका के शब्दों में 'थकी-हारी स्त्रियों का हंसमुख-सा ब्रीदिंग स्पेस बन गयी है आज की कविता, जहां स्त्रियों को मिलता है स्त्री का कंधा और एक नये रस का परिपाक होता है जो प्यार, शांति और संवेदना बना है । इस रस का नाम बहनापा, बहनापा जो किसी भी वर्ग, किसी भी वर्ण, किसी भी धर्म या नस्ल की अनजान स्त्रियों के बीच भी एक रोशनी का पुल बना देता है । कविता ने बस इसी पुल का काम किया है ।'

सन्दर्भ ग्रंथ

प्रभा खेतान- स्त्री उपेक्षिता, भूमिका, हिन्द पॉकिट बुक्स, नई दिल्ली, २००८ २-प्रभा खेतान- स्त्री उपेक्षिता, पेज न.२५

वही

अनिता भारती (कविता आकांक्षा) (एक कदम मेरा भी-पेज नं.५६), काव्य संग्रह), बुक्स इंडिया, नयी दिल्ली, २०१३

अनिता भारती एक कदम मेरा भी-४३

युद्धरत आम आदमी जन -साहित्य का दस्तावेजी त्रैमासिक, स्त्री मुक्ति आंदोलन पर केन्द्रित कविता विशेषांक पूर्णांक,१०८, २०११,अनामिका, पेज नं.१११

युद्धरत आम आदमी विशेषांक, २०११, अनामिका ('स्त्रियां' कविता से),पेज नं.११०

युद्धरत आम आदमी विशेषांक, २०११, पेज.नं.५८

युद्धरत आम आदमी विशेषांक, २०११,पेज नं.११०

युद्धरत आम आदमी विशेषांक, २०११,पेज नं.२२

युद्धरत आम आदमी विशेषांक, २०११,पेज नं.११४

युद्धरत आम आदमी, विशेषांक-२०११,पेज नं.११५

युद्धरत आम आदमी, विशेषांक-२०११, पेज नं.१३६

युद्धरत आम आदमी, विशेषांक-२०११, पेज नं१४८

युद्धरत आम-आदमी, विशेषांक, पेज न.५८-५९

युद्धरत आम आदमी विशेषांक, २०११, पेज नं.१५९

नगाड़े की तरह बजते है शब्द-निर्मला पुतुल, भारतीय ज्ञानपीठ, पेज नं.९-१०

नगाड़े की तरह बजते हैं शब्द, पेज नं.८

नगाड़े की तरह बजते हैं शब्द, पेज नं.-५०-५१

योगिनी शुक्ल

युद्धरत आम-आदमी, विशेषांक, २०११, पेज नं.११३

युद्धरत आम आदमी विशेषांक, २०११, भूमिका ।

भूमिका, युद्धरत आम-आदमी, विशेषांक, २०११

डॉ. प्रियंका सोनकर
असिस्टेंट प्रोफेसर ,
हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
९५८२६९२५२३

रूकती नहीं है नदी -एक अद्धयन

डॉ.रंजीत एम्

अध्यक्ष हिंदी विभाग
एम.इ.इस कल्लटी कॉलेज
मन्नारकाट ,पालक्काट
केरल
०९३८७४४१३००
ई -मेल ranjutkr@gmail.com

मार्क्स ने लिखा है , 'कविता मनुष्यता की भाषा है. मनुष्य को ही मनुष्य की भाषा सुनने और बोलने की क्षमता होगी .जहां मनुष्य होगा वही कविता होगी '.उमाकांत खुबालकर जी के काव्य संग्रह 'रुकती नहीं है नदी 'से मनुष्यता का स्वर ही गूँज उठ रहे है . ये कवितायें दिल से लिखी गयी है ,बनाई गई नहीं .हर भाषा की शुरुवात शब्दों से होती है .खुबालकर जी ने भी अपनी कविताओं की शुरुवात शब्दों से किया है .

'शब्द हो जाते है चुप
और रच देते है ब्रह्मांड
बन जाते है , सबद और कुरआन
हो जाते है क्रान्ति के साए में '

वर्तमान समय में कवि लगातार बुराइयों से जूझ रहा है और जब वह देखता है कि उसकी लाखों कोशिशों के बावजूद दुनिया सुधर नहीं रही है तो भी वह हिम्मत नहीं हारता है और दुनिया के अच्छे-अच्छे लोगों को किसी न किसी तरह से बचा लेना चाहता है। इसी संघर्ष में भयावह त्रासदी के बीच वह जीवन बिताता है। उसका सपना एक अच्छी दुनिया बनाने का है . भूमंडलीकरण और बाजारवाद हमारी संस्कृति को पूर्ण रूप से नष्ट कर चुका है .इसका सुन्दर चित्रण 'विरासत ' कविता में दर्शनीय है .

' रविवार को
सुबह सुबह मैं ने
पड़ोसी से नमस्ते की
उसने सर हिला दिया , बात नही की
दुसरे ने
अखबार में मुह छुपा लिया '

जो समाज आपस मे विश्वास रख कर आगे बढे थे,उसका हाल अब यह है .एक दुसरे पर भरोसा नहीं करते हुए अपनी अपनी घेरों में अड़े रहना सभी पसंद करते है. पुराने समाज के लोग और नए लोगों के बीच इसी के कारण मतभेद हो रहे है .कवी आगे बता रहा है .शायद वे चुप होंगे ,मगर ......

'मुझे देख कर भी सभी नहीं देख रहे थे

मैं घर में सब जगह दिखायी दे रहा था
परंतू कही नहीं था
मेरे अंदर की बढ़ती हुई चुप्पी
किसी आतंकी विस्फोट से ज़्यादा
भयावह थी '

भारत जनतान्त्रिक देश है. यहाँ

ISSN:2583-5750

साहित्य मेघ

र्ष २, अंक : ११
वम्बर २०२२

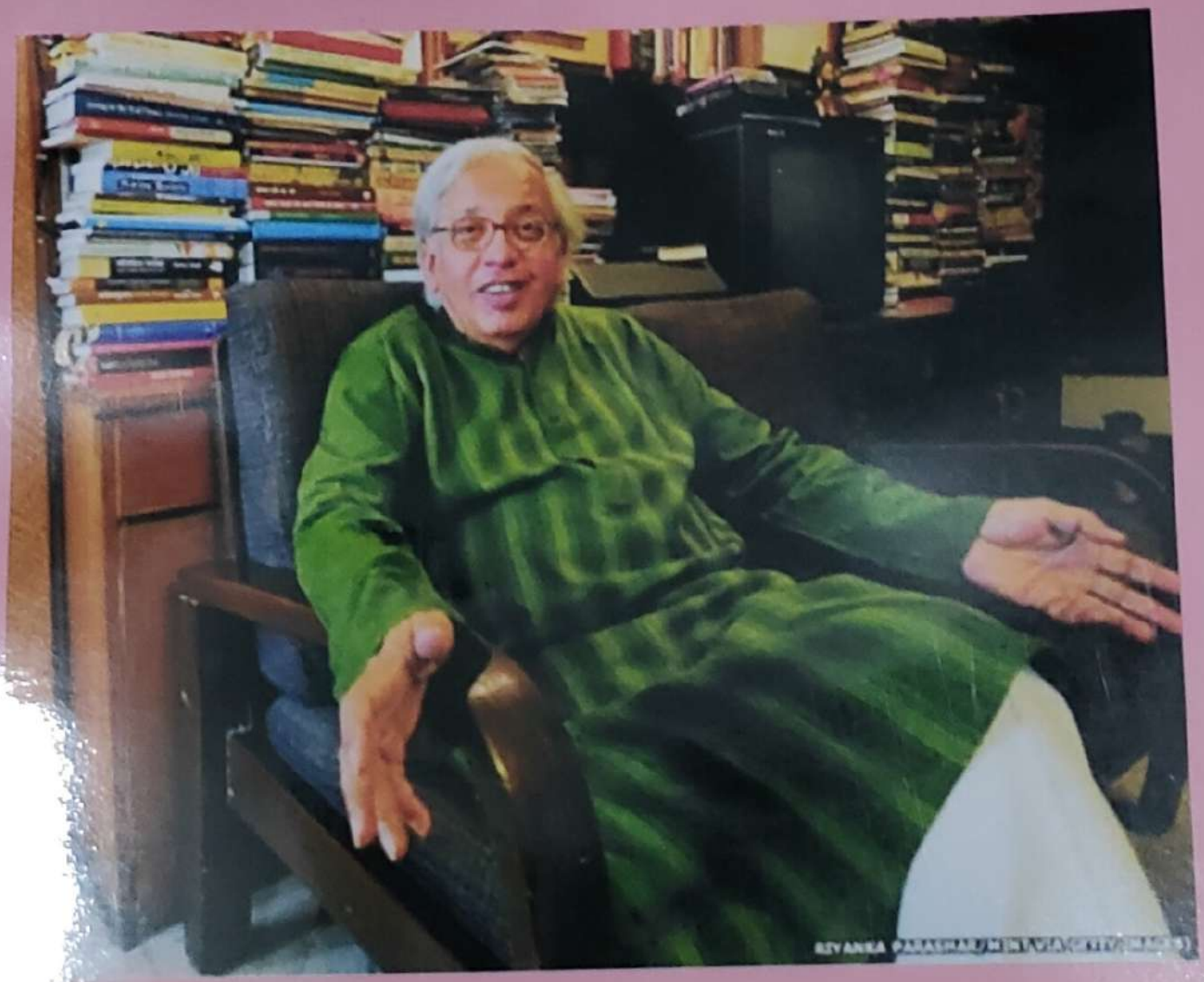

वरिष्ठ साहित्यकार अशोक वाजपेयी